ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 1.9152(UIF) VOLUME - 4 | ISSUE - 5 | JANUARY - 2018

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

विविधता में एकता–भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर

डॉ. श्रीमती सुनीला एक्का
सहायक प्राध्यापक (राजनीतिशास्त्र)शासकीय स्नातकोत्तर अग्रसेन महाविद्यालय बिल्हा, जिला–बिलासपुर (छ.ग.)

प्रस्तावना :-

बहुसांस्कृतिक तत्वों से समन्वित भारत की सांस्कृतिक विरासत बाह्य आक्रमणों, सांस्कृतिक संपर्क और सामाजिक उद्धेलनों के कारण नये–नये प्रयोगों का परिणाम है। संस्कारों की दृष्टि से भारतीय जनमानस सदैव ही समृद्ध रहा है। भारत में अपने सांस्कृतिक समृद्धता के आधार पर ही एक समय 'विश्वगुरू' की पहचान कायम की थी।

संस्कृति एक ऐसी अवधारणा है जिसे लक्षणों के आधार पर ही निर्धारित किया जा सकता है। क्योंकि इससे कोई एक स्पष्ट परिभाषा संभव नहीं है, वस्तुतः संस्कृति का निर्माण संस्कारों से होता है, इस प्रकार संस्कारों का विकसित या घनीभूत रूप ही संस्कृति है।

विविधता में एकता–भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर

- भारतीय संस्कृति विशिष्टताओं में प्रधान है – सामुहिक कुटुम्ब प्रणाली, चिंतन की स्वतंत्रता, ग्रहणशीलता, प्राचीनता, वैश्विक कल्याण की भावना, सहिष्णुता और जो महत्वपूर्ण व उल्लेखनीय है, वह – अनेकता में एकता। महान विद्वान हिजले ने इस पर लिखा है – ''भौतिक, सामाजिक, भाषायी व धार्मिक वैविध्य के अंतर में समूची भारतीय शैली में हिमांचल से लेकर कैमोरिन तक एक एकता देखने को मिलती है।
- हमारी संस्कृति एक राष्ट्रीय संस्कृति है। यह सर्वांग संस्कृति है, जिसके मूल में उच्च कोटि की आध्यात्मिकता छिपी हुई है, किन्तु जिसका बाह्य स्वरूप धर्मनिरपेक्ष है। यहाँ धर्मनिरपेक्षता के माने यह कदापि नहीं है कि यह अधार्मिकता या नास्तिकता का सूचक है। यह वह धर्मनिरपेक्षता है, जिसमें आध्यात्मिक मूल्यों की सार्वलौकिता पर जोर दिया जाता है।
- हमारी संस्कृति 'जिओ और जीने दो' की है। यानी हमारी संस्कृति का स्वरूप लोक मंगलकारी और कल्याणकारी है। यह वह संस्कृति है, जिसमें सभी के सुख और कल्याण की कामना की जाती है। हमारी संस्कृति आध्यात्मिक चेतना से भरपूर है। इसमें धार्मिक कट्टरता नहीं है, बल्कि धार्मिक सहिष्णुता के दर्शन होते हैं।
- हमारी संस्कृति में आत्मिक उत्थान निहित रही है। आत्मिक उत्थान के लिये हमनें ज्ञान प्राप्त किया है और श्रेष्ठ लोगों के सानिध्य में रहकर अपनी संस्कृति को समृद्ध ही बनाया है। कठोपनिषद् में कहा भी गया है – 'उतिष्ठत जागृत प्राप्य वरान्निबोधतः।' अर्थात् उठो, जागो और श्रेष्ठ पुरूषों के पास जाकर ज्ञान प्राप्त करो।

- ❖ भारतीय संस्कृति समाज का कल्याण करती है, क्योंकि यह सामुदायिकता को प्रश्रय देती है। हमारी संस्कृति में जीवन के उच्चतम् मूल्यों के दर्शन होते हैं। यह सामाजिक चेतना की संस्कृति है, जिसमें सामाजिक प्रथाओं, व्यक्तियों के चित्तवृत्तियों, भावनाओं, मनोवृत्तियों, आचरण के साथ, उसके द्वारा भौतिक पदार्थों को विशिष्ट स्वरूप दिये जाने की अभिव्यक्ति से होती है।
- ❖ भारतीय संस्कृति की उच्चतम् विशिष्टता है, इसमें 'वसुधैव कुटम्बकम्' और सर्वकल्याण की भावना का व्याप्त होना। सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया जैसा कल्याणकारी चेतना इसमें उदात्त रू॰ में कहीं और मिलना मुश्किल है। गीता, रामायण, महाभारत, रामचरित मानस से लेकर प्रगतिवादी रचनाओं में भी यह तथ्य ध्वनित होता है।

भारत की संस्कृति विविधता के बावजूद एक समान दृष्टिकोंण की संस्कृति है, जिसमें भारतीय मस्तिष्क दिखता है, विभिन्न आंदोलनों और संस्कृतियों का बौद्धिक प्रभाव दिखता है। यह सामुहिक और साझा संस्कृति है, जिसमें समरसता के तत्व सर्वोपरि है। यह सद्भावना की संस्कृति है, जिसने लोगों को जोड़ा है, वस्तुतः सम्पूर्ण रूप से विविधता में एकता का प्रत्यक्ष ज्ञान और विचारों की सर्वोच्चता, भारतीय संस्कृति की विशेषतायें है।

राष्ट्रीय संस्कृति का मूल प्रक्रिया में निहित है, जो त्याज्य मूल्यों के विघटन और नये मूल्यों के निर्माण को उत्प्रेरित करें। अपने देश की संस्कृति पर सबको गर्व करना चाहिये, लेकिन हममें इतना आत्मबल भी होना चाहिये कि हम उन रूढ़ियों को निस्तारित कर सकें, जो मानवीय गरिमा और राष्ट्रवादी परिकल्पना पर चोट करती हो। आवश्यकता इस बात की है कि अतीत की सांस्कृतिक धरोहर को हम सहेजें–सवाँरे और उसकी मजबूत आधारशिला पर खड़े होकर नये मूल्यों और नई संस्कृति का निर्मित – विकसित करें।

REFERENCES (संदर्भ–सूची) :–

1. दैनिक मासिक पत्रिका योजना/अप्रैल 2015/पृष्ठ 61, 62
2. डॉ. अमिता सिंह/लिंग एवं समाज/पृष्ठ 200, 201, 203